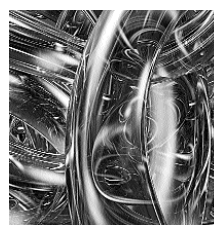


SUNDAY

हम तुम



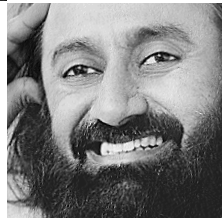
भ्रमल स्पंदन.....2

बेहद है प्यारी साइकिल सवारी...3



दुनिया के दस युवा अखपति. 4

अध्यात्म के बिना धर्म नहीं...4



पत्रिका रविवार, 5 दिसंबर 2010

सांस्कृतिक उथल-पुथल का केन्द्र होने के नाते दक्षिण एशियाई लेखन इन दिनों प्रकाशन की दुनिया में लोकप्रिय होता जा रहा है। रचनाकारों की एक नई जमात तेजी से एक बड़े पाठक संसार को संबोधित कर रही है। मिलिए ऐसे ही कुछ जादुई कलमकारों से



दानियाल मुन्नुद्दीन

नौकरी छोड़ी

इन दिनों पहले उपन्यास की रचना में लगे हैं जिसकी कहानी 1970 के पाकिस्तान से संबंधित है।

थार की रेत से निकला हीरा

सैं तालीस साल के दानियाल मुन्नुद्दीन आजादी से पहले की इंडियन सिविल सेवा के अधिकारी बेटे हैं जो बाद में पाकिस्तान के मुख्य चुनाव आयुक्त भी बने। गुलाम मुन्नुद्दीन की दूसरी बीवी द वाशिंगटन पोस्ट की पत्रकार बारबरा की संतान दानियाल का बचपन पाकिस्तान के थार और अमेरिका के बीच बंटा हुआ है। जैसा कि दानियाल को खुद लगता है कि मैनहट्टन की गगन चुम्बी इमारत के 42वें फ्लोर के दफ्तर में पूर्वी नदी से देखते हुए होसला हुआ कि मेरी कहानियाँ असरदार हैं, बचपन की, खेतों की... मुझे लगा कि मैं उस हालत में था जब मैं ये कहानियाँ पश्चिमी पाठकों को सुना सकता था। खेतों और पुरानी सामंती जिंदगी की कहानियाँ। मैंने अपनी लॉ फर्म की नौकरी छोड़ दी। पाकिस्तान लौट गया और यह

इन इदर रूमर्स अदर वंडर्स की शुरुआत थी। उनके इस पहले कहानी संग्रह को अमेरिकन अकेडमी ऑफ आर्ट्स एंड लेटर्स की ओर से रोजेथल फैमिली फाउंडेशन अवार्ड से नवाजा गया। नेशनल बुक अवार्ड, पुलित्जर, कॉमनवेल्थ राइटर्स प्राइज के लिए फाइनेलिस्ट में दानियाल शामिल रहे। द पब्लिशर्स वीकली, द इकॉनॉमिस्ट और टाइम मैगजीन ने उसे साल की दस बेहतर किताबों में शामिल किया था। इसी किताब में शामिल एक कहानी नवाबदीन इलेक्ट्रीशियन को सलमान रुश्दी ने 2008 की बेस्ट अमेरिकी स्टोरीज में चुना। इस संग्रह का उन्नीस देशों की सोलह भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन कम बात नहीं है। इन दिनों पहले उपन्यास की रचना में लगे हैं जिसकी कहानी 1970 के पाकिस्तान से संबंधित है।

शुरुआत

मुझे लगा कि मैं उस हालत में था जब मैं ये कहानियाँ पश्चिमी पाठकों को सुना सकता था। रवेटों और पुरानी सामंती जिंदगी की कहानियाँ। मैंने अपनी लॉ फर्म की नौकरी छोड़ दी।



स्टोरीटेलर्स ऑफ साउथ एशिया

डॉ. दुष्यंत



नमिता देवीदयाल

द म्यूजिक रूम के बाद ऑप्टर टेस्ट नामक अपने ताजा उपन्यास में चर्चा में आई नमिता ने कैम्ब्रिज विवि में पढ़ाई की है और पेशे से पत्रकार हैं। मुंबई में रहती हैं। वनों किताबें रैम हाउस से आई हैं। वह भारत की कहानी कहती हैं। अपना अंदाज है और मुहावरा भी।



सुवर्ण रायचौधरी

कोलकाता में जन्मी, रसायन विज्ञान की पढ़ाई की। 2004 में पहली कहानी न्यूयार्क स्टोरीज में छपी-बंगाल मानसूना पहला उपन्यास द डिस्टेंस चर्चा में है। अपनी कहानियों के लिए पुश्कर्ट प्राइज के लिए नामांकित कई गई हैं। ह्यूस्टन टेक्सास में रहती हैं।



नील मुखर्जी

कोलकाता में जन्मे और कोलकाता के अलावा ऑक्सफोर्ड व कैम्ब्रिज में पढ़ाई की। लंदन में रहते हैं। पहला उपन्यास पास्ट कन्टीन्यूज 2004 में आया था। वोडाफोन कॉर्पोरेशन अवार्ड से नवाजा गया था। नील एक जुबानी लेखक हैं। जिंदगी और जहाँ को शब्द देता कलमकार।



कराची की कैमिला

कराची में पली बढ़ी हैं, अंग्रेजी में लिखती हैं, उम्र है सैंतीस साल। शुरुआती दौर में कश्मीरी कवि आगा शाहिद अली से बहुत प्रभावित रही हैं। पहला उपन्यास 1998 में आया और एक तहलका मचा दिया- द सिटी बाय द सी। जॉन लेविजियन रीज प्राइज के लिए शॉर्टलिस्ट हुआ। 1999 में पाकिस्तान का साहित्य के लिए प्रधानमंत्री अवार्ड मिला। पांचवां उपन्यास बर्न्ट शैडोज ओरेंज प्राइज ऑफ फिक्शन के लिए शॉर्टलिस्ट हुआ। दूसरे साल्ट एंड सेफ्रोन ने उन्हें ओरेंज 21 राइटर्स ऑफ 21 सेन्चुरी में जगह दिला दी।

करामाती कलम



पहली कहानी सत्रह साल की उम्र में लिखी थी। उस वक्त पाकिस्तान में बहुत कम लोग थे जो अंग्रेजी में लिखते थे। पर ऐसा कोई लेखक नहीं था जिसे नायक के तौर पर देखा जा सके।

कैमिला कहती हैं, मैंने हमेशा लेखक बनना चाहा पर अपनी आवाज को लोगों तक पहुंचाने में बक लगा। पहली भाषा अंग्रेजी थी और पाया की ज्यादातर किताबें विदेशों में लिखी गई हैं। पहली कहानी सत्रह साल की उम्र में लिखी थी। उस वक्त पाकिस्तान में बहुत कम लोग थे जो अंग्रेजी में लिखते थे। पर ऐसा कोई लेखक नहीं था जिसे नायक के तौर पर देखा जा सके। अमेरिका पढ़ने गई थी और शुरुआती लेखन घर की याद से जुड़ा था। ये उनके लिए कागज पर अपनी दुनिया को फिर से रचना था। अब वो या तो अमेरिका में रचनात्मक लेखन पढ़ा रही होती हैं या लंदन या कराची में ऐसी कहानियाँ ढूँढ रही होती हैं। वो मानती हैं कि उनकी मां मुनीजा शम्सी लेखिका पत्रकार हैं। अतिया हुसैन और जहांगिरा हबीबुल्ला जैसी लेखिकाएँ उनके परिवार में रही हैं जो उनकी मजबूत नींव है और इसका उन्हें फ़ख़ है।

अंग्रेजी में सबसे आगे



शब्द शिल्पी

अमित चौधरी

समकालीन भारतीय अंग्रेजी लेखकों में सबसे महत्त्वपूर्ण दर्खल और नाम।

कलकाता में जन्मे, मुम्बई में परवरिश। ईस्ट एंजेलिया विवि में तुलनात्मक साहित्य पढ़ाते हैं। 1991 में पहली किताब को कॉमनवेल्थ राइटर्स प्राइज दिया गया था। ए स्ट्रेंज एंड सबलाइम एड्रेस ऑफ आप्परनून राग के लिए उनको अवार्ड मिला था। डीएससी लिटरेचर अवार्ड में द इमोर्टल्स के लिए नामांकित। 2002 में न्यू वर्ड के लिए साहित्य अकादमी अवार्ड मिला था। आलोचकों की नजर में देश के बेहतरीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग्रेजी लेखकों में से हैं।

एक रहस्य स्नोवा वार्ना

कथा तिलिस्म

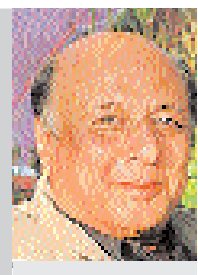
स्नोवा वार्ना

कोई साक्षात्कार नहीं, कोई सार्वजनिक उपस्थिति नहीं, पर हिंदी संपादकों ने हाथों हाथ लिया।



दक्षिण एशिया की एकमात्र रहस्यमयी लेखिका। किसी भी भाषा की ऐसी विचित्र लेखिका जिसका वजूद तक रहस्य है। हिंदी को इसका गौरव हासिल हुआ है। लगभग हर चर्चित साहित्यिक पत्रिका में कहानी छपी, एकाधिक सम्मान मिले, विवाद, बहस, चर्चाएँ हुई हैं। एक उपन्यास ए वंडर जनी अंग्रेजी में और हिंदी में सैनी अशेष के साथ देह गगन के सात समंदर प्रकाशित हुआ है। कोई साक्षात्कार नहीं, कोई सार्वजनिक उपस्थिति नहीं, पर हिंदी संपादकों ने हाथों हाथ लिया। शीर्षस्थ आलोचक नामवर सिंह तक ने कथालेखिका के तौर पर सराहा और कहा कि अगर वजूद नहीं भी है तो उसके लेखन को तो माना ही जाना चाहिए। तथाकथित तौर पर मनाली में जन्मी, विदेशों में रही। कई भाषाओं का ज्ञान रखने वाली यह लेखिका पिछले पांच से अधिक सालों से एक सनसनी के रूप में पढ़ी जा रही है।

एक सितारा उदयप्रकाश



उदयप्रकाश

लगातार अपनी भाषा के मठाधीशों और संस्थानों से उपेक्षा और तिरस्कार के बावजूद पाठकों के असीम प्यार और जीवन यथार्थों के जादुई लेखन से चर्चा में रहने वाला हिंदी साहित्य का अकेला नाम है- उदयप्रकाश। कमलेश्वर के बाद सितारा हैसियत भी उन्हें ही हासिल हुई है। कहानी मोहनदास पर बनी फिल्म फेस्टिवल्स में सराही गई है, कई अवार्ड जीते हैं। हाल ही पीली छतरी वाली

हिंदी का हीरो



लड़की का जर्मन अनुवाद बेहद चर्चित हुआ। उसके संदर्भ में 15 जर्मन विश्वविद्यालयों में आमंत्रित किए जाने वाले विरले हिंदी लेखक भी बने हैं। इससे पूर्व पीली छतरी वाली लड़की के अंग्रेजी अनुवाद को पेन ग्रांट अवार्ड दिया गया था। पिछला सार्क लिटरेरी अवार्ड भी उन्हें दिया गया था। दक्षिण एशिया के बुनियादी स्वरूप और जीवन यथार्थों के प्रामाणिक कथा लेखक के तौर पर उनकी ख्याति, भाषा और भूगोल की सीमाओं को लांघती हैं।

दक्षिण एशिया के बुनियादी स्वरूप और जीवन यथार्थों के प्रामाणिक कथा लेखक के तौर पर उनकी ख्याति भाषा और भूगोल की सीमाओं को लांघती हैं।